नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

कथक नृत्य में उत्स्फूर्तता से उपज की ओर बढ़ते हुए रियाज का महत्त्व

आसावरी पाटणकर

उद्गार, 502, प्रेस्टीज कॉर्नर,
अलंकार पुलीस स्टेशन के नजदीक, कर्वे नगर, पुणे

सार-संक्षेप

यह शोधपत्र भारतीय अभिजात कलाओं में, विशेषतः कथक नृत्य में उत्स्फूर्तता, उपज और रियाज के संबंध का विवेचन करता है। उत्स्फूर्तता वह तात्कालिक प्रेरणा है जो किसी क्षण, दृश्य या विचार के प्रभाव से सहज रूप में उत्पन्न होती है। यह सृजनात्मक ऊर्जा का बीज रूप है। लेकिन यह बीज तभी अंकुरित होता है जब वह रियाज की अनुशासित प्रक्रिया से गुजरता है। अनेकों वर्षों के अविरत परिश्रमों के पश्चात ही उत्स्फूर्त अन्तःप्रेरणा एक परिपक्व, सुसंगठित कलात्मक अभिव्यक्ति, अर्थात उपज बनती है। रियाज केवल तकनीकी अभ्यास नहीं, बल्कि गहन अनुशासन को आत्मसात करने की प्रक्रिया है। रियाज का लगाव होना कला साधना में अनिवार्य है। रियाज करते करते अपनी कला विधा में निरंतर खोज की यह प्रक्रिया कलाकार को न केवल दक्षता प्रदान करती है, अपितु आत्म-संवाद के माध्यम से कलाकार की आंतरिक चेतना को भी जगाती है। रियाज यह गुरु-शिष्य परंपरा में अत्यंत गहरी तरह से जुडी हुआ संकल्पना है, जिसमें अभ्यास को एक तपस्वी साधना के रूप में देखा जाता है–जहाँ अनुशासन, समय, मौन और श्रवण के माध्यम से ज्ञान संचरित होता है। रियाज का यह स्वरूप धीरे-धीरे कलाकार के व्यक्तित्व में आत्मसात हो जाता है। आज के दौर में तकनीकी सहायता और समय-संक्षिप्त विधियों के साथ रियाज विकसित हो रहा है। इसमें स्वतंत्रता, व्यक्तिगत प्रयोग और नवाचार को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। इस शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि उत्स्फूर्तता से उपज तक की यात्रा में रियाज ही एकमात्र साधन है जो उत्स्फूर्त प्रेरणा को कलात्मक उपज में रूपांतरित करता है, और परंपरा की गहराई एवं आधुनिकता की नवीनता के बीच संतुलन बनाए रखता है।

मुख्य शब्दः उत्स्फुर्तता, उपज, रियाज, अंतःप्रेरणा, अनुशासन, पुराने समय में रियाज की पद्धति, आज के दौर में रियाज

शोध-पत्र

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय कलाएँ सदियों से देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग रही हैं। ये कलाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि गहरी दार्शनिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जड़ों से जुड़ी हुई हैं, जिन्होंने भारतीय सभ्यता के विकास और मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन विविध शैलियों में, कथक नृत्य का एक अद्वितीय स्थान है। यह अपने भीतर कथा-वाचन, भावाभिनय, लयकारी और अंगविन्यास के अनेक स्तरों को समेटे हुए एक बहुआयामी कला है। कथक अपनी विशिष्टताओं, जैसे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से जुड़ाव, तत्कार और भ्रमरी, के कारण अन्य भारतीय नृत्य शैलियों से अलग है, और इसकी मंदिरों से दरबारों तक की यात्रा ने इसमें एक अनूठा दरबारी सौंदर्यशास्त्र जोड़ा है। (आजाद 470)

कलात्मक सृजन की प्रक्रिया में, उत्स्फूर्तता वह क्षणिक और सहज प्रेरणा है जो किसी विचार या भाव के रूप में जन्म लेती है। यह रचनात्मक ऊर्जा का बीज है, जिसमें असीम संभावनाएँ छिपी होती हैं। लेकिन यह बीज तब तक एक पूर्ण विकसित कलाकृति नहीं बन सकता, जब तक कि वह रियाज की कठोर और अनुशासित प्रक्रिया से न गुजरे। (फडके 21) रियाज ही वह साधन है जो इस उत्स्फूर्त प्रेरणा को एक परिपक्व और प्रभावशाली कलात्मक अभिव्यक्ति, यानी उपज, में रूपांतरित करता है।

हालाँकि, 21वीं सदी में तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के कारण कला सीखने और सिखाने के तरीकों में बड़ा बदलाव आया है। आज के कलाकार ऑनलाइन संसाधनों और तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। इस बदलाव ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या रियाज का पारंपरिक, तपस्वी स्वरूप अभी भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकता है, या आधुनिकता के साथ उसका स्वरूप और प्रभाव बदल रहा है। यह शोधपत्र इसी महत्त्वपूर्ण बहस पर प्रकाश डालता है, जहाँ एक ओर परंपरा की गहनता है और दूसरी ओर आधुनिकता की नवीनता, और दोनों के बीच रियाज की केंद्रीय भूमिका है।

शोध पत्र का उद्देश्य

1. उत्स्फूर्तता और उपज के बीच के अंतर और संबंध को स्पष्ट करना, और यह स्थापित करना कि रियाज ही उत्स्फूर्त प्रेरणा को ठोस कलात्मक उपज में बदलने का एकमात्र अपरिहार्य साधन है।
2. कथक नृत्य में रियाज को केवल एक तकनीकी अभ्यास के बजाय एक आध्यात्मिक साधना के रूप में परिभाषित करना, और गुरु-शिष्य परंपरा में इसकी केंद्रीय भूमिका का विश्लेषण करना।
3. रियाज के पारंपरिक और आधुनिक स्वरूपों के बीच के अंतर की पहचान करना और यह मूल्यांकन करना कि क्या आधुनिक रियाज पद्धति कलात्मक गहराई और आंतरिक चेतना को बनाए रखने में सक्षम है।
4. परंपरा और आधुनिकता के बीच एक रचनात्मक संतुलन स्थापित करने के लिए एक संभावित मॉडल या दृष्टिकोण का सुझाव देना। इस उद्देश्य का लक्ष्य सिर्फ समस्याओं को उजागर करना नहीं, बल्कि ऐसे समाधान प्रस्तुत करना है जो कथक नृत्य की समृद्ध विरासत को बनाए रखते हुए आधुनिकता के लाभों का उपयोग कर सकें।

प्राक्कल्पना

कथक नृत्य में, उत्स्फूर्त प्रेरणा को एक परिपक्व कलात्मक उपज में रूपांतरित करने के लिए रियाज (निरंतर अभ्यास) एक अपरिहार्य साधन है। यद्यपि आधुनिक तकनीकी साधन रियाज की प्रक्रिया को सुविधाजनक बना सकते हैं, लेकिन कलात्मक उत्कृष्टता और आध्यात्मिक गहराई प्राप्त करने के लिए रियाज का पारंपरिक, तपस्वी स्वरूप अभी भी अनिवार्य है।

अध्ययन की प्रासंगिकता

यह शोध उत्स्फूर्त कलात्मक प्रेरणा को परिपक्व अभिव्यक्ति में बदलने के लिए रियाज के गहन अनुशासन को रेखांकित करता है। यह रियाज को मात्र एक तकनीकी अभ्यास के बजाय एक बहुआयामी साधना के रूप में प्रस्तुत करता है, जो कलाकार के कौशल के साथ-साथ उसकी आंतरिक चेतना का भी विकास करती है।

यह शोध गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज की केंद्रीय भूमिका का विश्लेषण करता है, जहाँ अभ्यास को एक तपस्वी साधना माना जाता है। साथ ही, यह आधुनिक तकनीकी साधनों के उपयोग से रियाज के बदलते स्वरूपों का मूल्यांकन करता है, जिससे परंपरा की गहराई और आधुनिकता की नवीनता के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती पर विचार किया जा सके। (शर्मा 363-368)

अंततः, इस शोध के निष्कर्ष कला संस्थानों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी होंगे, जो भारतीय कला की विरासत को भविष्य के लिए प्रासंगिक और जीवंत बनाए रखने में सहायक होंगे। यह भारतीय कलाओं पर आधुनिकता के प्रभावों को समझने में एक महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदान भी देता है।

पारिभाषिक शब्द

भारतीय कला दर्शन में उत्स्फूर्तता:

उत्स्फूर्तता शब्द संस्कृत की धातु 'स्फुर्' से बना है, जिसका अर्थ है 'अचानक हिलना' या 'प्रकाशित होना'। (शास्त्री 984) (दीक्षित एवं उपाध्याय 1169) इसमें 'उत्' उपसर्ग जुड़ने से यह 'अचानक और प्रबल रूप से बाहर निकलना' का भाव देता है। इसीलिए, उत्स्फूर्तता का अर्थ 'सहज और स्वतःस्फूर्त प्रेरणा' होता है।

भारतीय कला दर्शन में, उत्स्फूर्तता को केवल एक संयोग नहीं माना जाता, बल्कि इसे कलाकार की प्रतिभा और साधना का परिणाम माना जाता है। यह एक तात्कालिक प्रेरणा है जो मन में अनायास उत्पन्न होती है। यह रचनात्मक ऊर्जा का वह बीज है, जो कलाकार को अन्य लोगों से अलग सोचने और अपनी व्यक्तिगत शैली विकसित करने की क्षमता देता है। संक्षेप में, उत्स्फूर्तता वह चिंगारी है जो कला साधना की अग्नि को प्रज्वलित करती है।

भारतीय कला दर्शन में उपज

उपज शब्द संस्कृत धातु 'पद्' से बना है, जिसका अर्थ है 'पहुँचना' या 'फलित होना'। (शास्त्री 469) (दीक्षित एवं उपाध्याय 183) यह 'उप' उपसर्ग के साथ मिलकर किसी रचनात्मक प्रक्रिया के अंतिम और परिपक्व परिणाम को दर्शाता है।

भारतीय कला दर्शन में, उपज वह निर्णायक अवस्था है जब उत्स्फूर्त प्रेरणा एक पूर्ण विकसित और प्रभावशाली कलाकृति का रूप ले लेती है। यह केवल एक विचार नहीं, बल्कि उसका पूर्ण प्रकटीकरण है, जो दर्शकों को एक गहरा कलात्मक अनुभव देता है। उपज निरंतर और अनुशासित रियाज का प्रत्यक्ष परिणाम है, जिसके माध्यम से कलाकार तकनीकी कौशल और भावनात्मक गहराई के साथ अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर पाता है। यह केवल निपुणता का प्रदर्शन नहीं, बल्कि कलाकार की गहन साधना, व्यक्तित्व और आत्म-विकास का प्रतिबिंब भी है। अंततः, 'उपज' ही वह अवस्था है जो कला के अंतिम लक्ष्य, यानी 'रस' की निष्पत्ति, को संभव बनाती है।

संक्षेप में, यदि उत्स्फूर्तता रचनात्मकता का बीज है, तो 'उपज' वह पूर्ण विकसित वृक्ष है जो अपने फल देता है, और यह 'रियाज' रूपी पोषण तथा गुरु के मार्गदर्शन से ही संभव हो पाता है, जिससे कलाकार अपनी अंतःप्रेरणा को एक ऐसी कलात्मक कृति में ढाल पाता है जो न केवल तकनीकी रूप से त्रुटिहीन हो, बल्कि दर्शकों के हृदय में भी गहरे उतर सके। (Saxena 170)

गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज का महत्त्व

भारतीय शास्त्रीय कलाओं में, विशेषकर कथक में, गुरु-शिष्य परंपरा ज्ञान हस्तांतरण का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। इस परंपरा में, रियाज (निरंतर

अभ्यास) की भूमिका सबसे अहम होती है। शिष्य अपने गुरु के सामने घंटों अभ्यास करता है, जहाँ गुरु उसकी गलतियों को सुधारते हैं और उसे कला के सूक्ष्म पहलुओं से परिचित कराते हैं। रियाज के माध्यम से शिष्य न केवल तकनीकी रूप से कुशल बनता है, बल्कि वह गुरु के कलात्मक दर्शन और विशिष्ट शैली को भी सीखता है। (श्रीमाली 38) यह प्रक्रिया गुरु और शिष्य के बीच एक अटूट रिश्ता बनाती है, जिसमें ज्ञान का प्रवाह भरोसे और समर्पण के साथ होता है। (श्रीमाली 179) रियाज कलाकार के चरित्र का निर्माण करता है, उसे धैर्य, लगन और विनम्रता सिखाता है, जिससे वह केवल एक नर्तक नहीं, बल्कि एक सच्चा कलाकार बनता है जो अपनी कला की विरासत को आगे बढ़ाता है।

रियाज: तपस्वी कला साधना का आधार

रियाज, अर्थात निरंतर कला-अभ्यास, यह भारतीय शास्त्रीय कलाओं में केवल एक दैनंदिन क्रिया नहीं, बल्कि एक गहन तपस्वी साधना है जो कला को जीवन का हिस्सा बना देती है। (श्रीमाली 208) जिस तरह एक साधक अपनी तपस्या में लीन रहता है, उसी तरह एक कलाकार भी रियाज में घंटों बिताकर शारीरिक और मानसिक चुनौतियों को पार करता है। यह मन और शरीर को एकाग्र करने का कठोर अनुशासन है, जो कलाकार को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण सिखाता है।

रियाज का लक्ष्य केवल कलात्मक निपुणता नहीं, बल्कि आंतरिक शांति, आत्म-जागरूकता और कला के माध्यम से सत्य की खोज भी है। यह कलाकार को अहंकार त्यागकर कला के प्रति पूर्ण समर्पण और विनम्रता सिखाता है, जिससे वह एक शिल्पकार से सच्चा साधक बन जाता है। (भाटे 72) रियाज की यह साधना चार प्रमुख स्तंभों पर टिकी हैः

1. **अनुशासन :** रियाज का आधार कठोर अनुशासन है, जिसमें नियमित अभ्यास और गुरु के निर्देशों का अक्षरशः पालन शामिल है। यह अनुशासन ही नर्तक को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रशिक्षित करता है, जिससे वह कथक की जटिल तकनीकों में महारत हासिल कर पाता है।
2. **समय :** रियाज में समय की पाबंदी और घंटों के निरंतर अभ्यास की गहरी माँग होती है। इस दोहराव से शरीर की मांसपेशियों में तकनीक की स्मृति बनती है, जिससे कला सहज और स्वाभाविक हो जाती है।
3. **मौन :** रियाज के दौरान बाह्य कोलाहल से दूर रहकर एक प्रकार के आंतरिक मौन को साधना पडता है। यह कलाकार को अपनी कला पर पूर्ण रूप से केंद्रित होने, शरीर की गतिविधियों को सूक्ष्मता से महसूस करने और एकाग्रता की शक्ति को चरम पर पहुँचाने में मदद करता है।
4. **श्रवण :** गुरु-शिष्य परंपरा में श्रवण का अत्यंत महत्त्व है। शिष्य केवल गुरु के निर्देशों को नहीं सुनता, बल्कि उनके प्रदर्शन को ध्यान से देखकर उसकी बारीकियों को आत्मसात करता है। यह सक्रिय श्रवण शिष्य को गुरु के गहन ज्ञान और उनकी विशिष्ट कलात्मकता को गहराई से समझने में सहायक होता है।

उपर्युक्त सभी आयामों के परिप्रेक्ष्य में, रियाज केवल एक शारीरिक अभ्यास नहीं रह जाता, बल्कि ज्ञान, कौशल और कलात्मकता के संचरण का एक शक्तिशाली माध्यम बन जाता है। यह कलाकार को अपनी कला में उत्कृष्टता और पूर्णता की ओर ले जाता है, जिससे वह न केवल एक कुशल नर्तक बनता है, बल्कि अपनी कला के माध्यम से एक गहरा प्रभाव छोड़ने में भी सक्षम होता है।

शोध प्रविधि

यह शोध एक विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है। इसमें कथक नृत्य में उत्स्फूर्तता से उपज तक की यात्रा में रियाज की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। परंपरा और आधुनिकता के बीच रियाज के महत्त्व को समझा जा सके इस हेतु से इस शोध पत्र के लिए गुरुजनों, समकालीन कलाकारों एवं विद्यार्थियो से प्राप्त उत्तर सूची का विश्लेषण किया है, जिसका सार स्वरूप इस प्रकार है–

1. रियाज का अर्थ और महत्त्व

सभी उत्तरदाताओं ने रियाज को केवल एक यांत्रिक अभ्यास नहीं, बल्कि साधना और आत्मविकास का माध्यम बताया है। यह मन, शरीर और आत्मा का संगम है, जो कलाकार में निरंतरता, एकाग्रता और अनुशासन विकसित करता है। रियाज से न केवल तकनीक में सुधार होता है, बल्कि यह भावनाओं की अभिव्यक्ति में गहराई और कला से व्यक्तिगत जुड़ाव भी स्थापित करता है। समकालीन कलाकारों ने रियाज को तपस्या के समान माना है, जिसमें बार-बार अभ्यास करने से सहजता आती है और कला 24 घंटे की साधना बन जाती है।

2. पारंपरिक बनाम आधुनिक साधन

- **पारंपरिक साधन (गुरु-शिष्य परंपरा):** विद्यार्थियों, कलाकारों और गुरुजनों ने एकमत से गुरु से आमने-सामने सीखने को सबसे प्रभावी विधि बताया है। इसके माध्यम से शिष्य शारीरिक भावों, सूक्ष्म संकेतों और भावनात्मक बारीकियों को गहराई से समझ पाता है। प्रत्यक्ष मार्गदर्शन से गलतियों का तुरंत सुधार होता है और सीखने की प्रक्रिया में एक विशेष वातावरण, ऊर्जा और प्रेरणा बनी रहती है।
- **आधुनिक साधन (ऑनलाइन कक्षाएं और वीडियो):** ऑनलाइन माध्यमों को सहायक उपकरण के रूप में देखा गया है, जो थ्योरी, बेसिक अभ्यास या नए विचारों के लिए उपयोगी हो सकते हैं। हालाँकि, इनमें कई चुनौतियाँ हैं, जैसे नेटवर्क की समस्या, ताल और लय को समझने में कठिनाई, और भावनात्मक जुड़ाव की कमी। इन माध्यमों को कभी भी प्रत्यक्ष प्रशिक्षण का विकल्प नहीं माना गया है।

3. रियाज को बेहतर बनाने के उपाय

उत्तरदाताओं ने रियाज को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ सुझाव दिए हैं, जैसे–

- प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट से एक घंटा अभ्यास करना।
- पिछली कक्षा की पुनरावृत्ति और कठिन अंशों पर ध्यान केंद्रित करना।
- अपने अभ्यास की वीडियो रिकॉर्डिंग कर उसका विश्लेषण करना।
- छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर समय-सारणी बनाना।

4. रचनात्मकता और उत्स्फूर्तता

अन्य कलाकारों के प्रदर्शन देखने से नई प्रेरणा और विचार मिलते हैं, जिससे कलाकार अपने नृत्य में नए प्रयोग कर पाते हैं। समकालीन कलाकारों ने यह भी बताया कि नियमित रियाज से प्रदर्शन के दौरान आने वाले अचानक नए विचारों या भावों को सहजता से शामिल किया जा सकता है।

5. भविष्य की दिशा

गुरुजनों के अनुसार, भविष्य में भारतीय शास्त्रीय कला को जीवंत रखने के लिए पारंपरिक रियाज और आधुनिक उपकरणों के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। तकनीकें केवल सहायक साधन हैं, जबकि कला की वास्तविक गहराई और गुरु-शिष्य का आत्मिक जुड़ाव केवल प्रत्यक्ष प्रशिक्षण से ही संभव है। यह संयोजन ही कला की गुणवत्ता और जीवंतता को बनाए रखने का मार्ग है।

निष्कर्ष

तकनीकी प्रगति ने भले ही रियाज़ के तरीकों को बदल दिया है, लेकिन इसकी मूल भावना - अनुशासन, समर्पण और आंतरिक साधना - आज भी कलात्मक पूर्णता के लिए आवश्यक है। प्राप्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कथक सीखने की प्रक्रिया में पारंपरिक (गुरु-शिष्य परंपरा) और आधुनिक (डिजिटल माध्यम) दोनों साधन महत्त्वपूर्ण हैं। हालाँकि, गुरु-शिष्य परंपरा को सबसे अधिक प्राथमिकता दी गई है, क्योंकि आधुनिक साधन, जो रियाज़ को अधिक सुलभ बनाते हैं, गुरु के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन से मिलने वाली सूक्ष्म समझ और भावनात्मक गहराई का विकल्प नहीं हैं। रियाज़ का भविष्य परंपरा और आधुनिकता के सफल सामंजस्य में निहित है, जहाँ तकनीक सहायक की भूमिका निभाए, न कि गुरु की।

यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि रियाज़ केवल एक शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि एक गहन तपस्वी साधना है जो कला को जीवन का हिस्सा बना देती है। उत्स्फूर्त प्रेरणा किसी कलाकार के मन में एक विचार या सहज स्फुरण के रूप में जन्म लेती है, जो एक अमूर्त बीज के समान है। हालाँकि, इस अमूर्त बीज को एक ठोस, परिपक्व और प्रभावशाली कलात्मक उपज (पूर्ण विकसित अभिव्यक्ति) में रूपांतरित करने में रियाज़ की भूमिका अपरिहार्य है।

यह प्रक्रिया किसी पौधे के बढ़ने के समान हैः उत्स्फूर्तता वह बीज है जिसमें असीमित संभावनाएँ निहित हैं, लेकिन यह कच्चा और नाजुक है। रियाज़ वह पोषण, पानी और सूर्य का प्रकाश है जो बीज को आवश्यक ऊर्जा और स्थिरता प्रदान करता है। इसके बिना, उत्स्फूर्तता का बीज मिट्टी में ही दफ़न हो जाता है। अतः, रियाज़ ही उत्स्फूर्तता के कच्चे बीज को परिपक्व और सुगठित कलात्मक उपज के विशाल वृक्ष में बदलने का एकमात्र साधन है। इन सभी तत्वों के माध्यम से, रियाज़ केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं रह जाता, बल्कि ज्ञान, कौशल और कलात्मकता के संचरण का एक शक्तिशाली माध्यम बन जाता है। रियाज वह कठोर और अनुशासित प्रक्रिया है जो एक कच्चे विचार को निखारती है, उसे आकार देती है और उसे प्रदर्शन के योग्य बनाती है। यह सिर्फ़ शारीरिक दोहराव नहीं है, बल्कि एक गहरी साधना है जहाँ–

1. **तकनीकी निपुणता का विकासः** रियाज के माध्यम से कलाकार अपनी कला की आवश्यक तकनीकों (जैसे कथक में तत्कार, भ्रमरी, हस्तक) में महारत हासिल करता है। यह निपुणता उत्स्फूर्त विचारों को बिना किसी बाधा के शारीरिक रूप देने की क्षमता प्रदान करती है। यदि शरीर प्रशिक्षित न हो, तो मन में उपजी हुई कोई भी जटिल लयबद्ध आकृति या भाव भंगिमा केवल एक विचार बनकर रह जाएगी।
2. **अभिव्यक्ति की गहराई और सूक्ष्मताः** रियाज कलाकार को भावनाओं और भावों को सूक्ष्मता से व्यक्त करने का कौशल सिखाता है। बार-बार अभ्यास से चेहरे के हाव-भाव, आँखों की गति और शरीर की मुद्राएँ इतनी सटीक हो जाती हैं कि कलाकार अपनी अंतरात्मा में उपजे भाव को पूरी गहराई के साथ दर्शकों तक पहुँचा पाता है। यह केवल ऊपरी या बाहरी प्रदर्शन नहीं, बल्कि आत्मा का प्रदर्शन होता है।
3. **संरचनात्मक स्पष्टताः** उत्स्फूर्त प्रेरणा अक्सर असंगठित होती है। रियाज कलाकार को अपनी रचनात्मकता को एक संरचित और सुसंगठित रूप देने में मदद करता है। रियाज सिखाता है कि कैसे एक नए बोल या भाव को किसी ताल या कथा के ढाँचे में किस प्रकार सुसंगत और समझने योग्य बनाया जाए।
4. **आत्मविश्वास और सहजताः** निरंतर रियाज कलाकार में अटूट आत्मविश्वास पैदा करता है। यह आत्मविश्वास ही उसे प्रदर्शन के दौरान सहजता से नए प्रयोग करने और अपनी उत्स्फूर्त प्रेरणाओं को बिना झिझक के प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता देता है। जब तकनीक पर पूर्ण पकड़ होती है, तो कलाकार अपने दिमाग को रचनात्मकता के लिए मुक्त कर पाता है।
5. **कलात्मक धीरज और एकाग्रताः** रियाज घंटों की एकाग्रता और धीरज की मांग करता है। यह मानसिक प्रशिक्षण कलाकार को लंबे और जटिल प्रदर्शनों के दौरान अपनी एकाग्रता बनाए रखने और अपनी कला को त्रुटिहीन रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है।

संक्षेप में, रियाज केवल एक यांत्रिक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह एक गहन अनुशासनात्मक प्रक्रिया है जो कलाकार की सहज और उत्स्फूर्त प्रेरणाओं को परिष्कृत एवं ठोस कलात्मक अभिव्यक्ति में रूपांतरित

करती है। जैसा कि प्राप्त उत्तर सूचि के विश्लेषण से ज्ञात होता है, गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत प्रत्यक्ष प्रशिक्षण ही इस प्रक्रिया का आधार है, क्योंकि यह सूक्ष्म भावों और तकनीकी बारीकियों को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है। बाह्य स्रोतों, जैसे अन्य कलाकारों के प्रदर्शन या डिजिटल माध्यमों से प्राप्त प्रेरणाएँ प्रायः प्रारंभिक और अविकसित होती हैं। रियाज ही वह माध्यम है जिसके द्वारा इन विचारों का पुनरावर्तन, परिष्करण और आत्मसातीकरण किया जाता है। यह सतत अभ्यास ही कलाकार में वह सहजता उत्पन्न करता है, जिसके परिणामस्वरूप वह मंच पर अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न होने वाले नए भावों को भी कुशलतापूर्वक अपनी प्रस्तुति में समाहित कर पाता है। इस प्रकार, रियाज एक अपरिहार्य कड़ी है जो अभ्यास को साधना में परिवर्तित कर प्रेरणा को स्थायी और उत्कृष्ट कला में ढालती है।

अंततः, रियाज ही वह खाद, पानी और सूर्य का प्रकाश है जो उत्स्फूर्तता के बीज को पोषण देता है, उसे अंकुरित करता है, और अंततः एक ऐसे विशाल व फलदार वृक्ष (कलात्मक उपज) में बदल देता है जिसकी जड़ें गहरी होती हैं और जिसकी सुंदरता व भव्यता दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। इसके बिना, उत्स्फूर्त प्रेरणा केवल एक क्षणिक चमक बनकर रह जाती है, जो कभी भी अपनी पूर्ण क्षमता तक नहीं पहुँच पाती।

परिशिष्ट

गुरुजनों के लिए प्रश्न–

1. आपकी अपनी रियाज यात्रा और शिक्षण में, पारंपरिक पद्धति के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू क्या रहे हैं, जिन्हें आप आधुनिक समय में भी अपरिहार्य मानते हैं?
2. क्या आपको लगता है कि ऑनलाइन माध्यमों से सिखाने पर, गुरु-शिष्य परंपरा का वह गहरा रिश्ता और सूक्ष्म ज्ञान का हस्तांतरण संभव है जो प्रत्यक्ष प्रशिक्षण में होता है?
3. तकनीक ने रियाज को कैसे प्रभावित किया है? क्या यह सिर्फ एक टूल है, या इसने रियाज की आत्मा (अनुशासन, समर्पण) को बदल दिया है?
4. उत्स्फूर्तता और उपज के बारे में आपकी क्या समझ है? क्या आज के कलाकारों में तात्कालिक प्रेरणा तो अधिक दिखती है, लेकिन उपज की गहराई कम है? अगर हाँ, तो इसके क्या कारण हो सकते हैं?
5. आपकी राय में, भविष्य में भारतीय शास्त्रीय कला को जीवंत रखने के लिए पारंपरिक रियाज और आधुनिक तरीकों के बीच सही संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है?

समकालीन कलाकारों के लिए प्रश्न

1. आप अपनी रियाज पद्धति में पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों (जैसे वीडियो, ऐप्स, ऑनलाइन क्लासेस) का उपयोग कैसे करते हैं? आपको कौन-सी विधि अधिक प्रभावी लगती है?
2. ऑनलाइन माध्यमों से रियाज करते समय आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? क्या इससे आपका ध्यान भटकता है या आपकी एकाग्रता प्रभावित होती है?
3. क्या आपको लगता है कि तकनीक ने आपके रचनात्मक प्रक्रिया को प्रभावित किया है? क्या इससे आपको नई उपज (कलात्मक रचना) बनाने में मदद मिली है?
4. आप उत्स्फूर्तता को अपने प्रदर्शन में कैसे शामिल करते हैं? क्या आप पाते हैं कि आपकी तात्कालिक प्रेरणा (उत्स्फूर्तता) को एक ठोस कलात्मक प्रस्तुति (उपज) में बदलना आसान है या कठिन?
5. आपकी पीढ़ी के लिए रियाज का क्या अर्थ है? क्या यह आपके लिए एक तपस्या है या सिर्फ कौशल में सुधार का एक माध्यम?

विद्यार्थियों के लिए प्रश्न

1. आप कथक सीखने के लिए किन साधनों का उपयोग करते हैं? क्या आप सिर्फ अपने गुरु से सीखते हैं या YouTube वीडियो या ऑनलाइन कक्षाओं का भी उपयोग करते हैं?
2. आप रोज़ाना कितना रियाज करते हैं? आपको क्या लगता है, रियाज को बेहतर बनाने के लिए क्या करना चाहिए?
3. क्या आपको ऑनलाइन क्लास में रियाज करना अधिक आसान या कठिन लगता है? क्यों?
4. आपके लिए रियाज का क्या मतलब है - क्या यह सिर्फ एक होमवर्क है या कुछ और?
5. क्या कभी किसी प्रदर्शन को देखकर आपके मन में कोई नया विचार आया है? आप उसे अपनी कला में कैसे शामिल करते हैं?

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Saxena, Sushil Kumar. Aesthetics of Kathak Dance. Sangeet Natak Akademi एवं Hope India Pub lications, 1991.
2. आजाद, तीरथ राम, कथक ज्ञानेश्वरी, प्रथम संस्करण, नटेश्वर कला मंदिर, 2008.
2. दीक्षित, कृष्णकान्त, एवं सूर्यनारायण उपाध्याय, संकलनकर्ता. अमर मानक हिंदी - हिंदी शब्दकोश. कमल प्रकाशन, 2005.
3. फडके, ना सी. प्रतिभा साधन. देशमुख अणि कंपनी, 2008.
4. भाटे, रोहिणी, लहजा, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2018.
5. शर्मा, स्वतंत्र. सौन्दर्य, रस एवं संगीत. दूसरा संस्करण., अनुभव पब्लिशिंग हाउस, 2015.
6. शास्त्री, डॉ. शिवप्रसाद भरद्वाज, संकलनकर्ता. संस्कृत - हिंदी - अंग्रेजी शब्दकोश भाग 1. अनिल प्रकाशन, 2008.
7. श्रीमाली, प्रेरणा. तत्कार - कथक की अन्तर्यात्रा. प्रथम संस्करण., सेतु प्रकाशन प्रा. लि., 2022.